शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

भारतीय चित्रकला के परिपेक्ष्य में अमृता शेरगिल का निजी योगदान

प्राप्तिः 26.04.2023
स्वीकृतः 20.06.2023

डा० रश्मि रजत
विभागाध्यक्ष एवं प्रवक्ता, ड्राइंग एवं पेटिंग विभाग
सुशीला इण्टरकालिज, गाजियाबाद
ईमेलः *dr.rashmirajat@gmail.com*

23

सारांश

चित्रकला चित्रकार के गूढ़ भाव की अभिव्यंजना है, उसके अर्न्तमन की सजीव झांकी है। सच्चा कलाकार वह है जो न केवल एक रूकी हुई परम्परा का पुनरूद्धार करता है, प्रत्युत उस उदात्त कला का दिग्दर्शन कराता है, जो 'सत्य शिवं सुन्दरम' की समष्टि है। समूचे सौदर्य की अनुभूति केवल ऐन्द्रिक अनुभूति नहीं होती। अर्न्तदृष्टि का इसमें एक बहुत बड़ा योगदान रहता है। इनकी अनुपस्थिति में कलाकार को दिव्य दृष्टा होना कभी भी संभव नहीं हो पाता। अमृता शेरगिल को यदि एक दिव्य दृष्टा चित्रकार की कोटि में माना जाता है, तो उसके पीछे भी यही कारण है। अमृता शेरगिल सच्चे अर्थो में सर्वप्रथम आधुनिक भारतीय कलाकारों की गणना में आती हैं। अमृता शेरगिल के चित्र भी पुरानी शैलियों की परिपाटी को तोड़ कर जीवन धारा में प्रवेश के चित्र हैं। उनकी कलाकृतियों का शरीर आधुनिक धारा के सभी अवयवों, ढंगों व उपकरणों से सज्जित है, किन्तु अपनी मूल चेतना और आत्मा में वे पूर्णतः भारतीय हैं। अमृता शेरगिल का मानवीय भाव जो कि उनके चित्रों में चित्रित पात्रों की असहाय, निरीह, उदास तथा घुटन भरे दैनिक जीवन का जीता जागता प्रतिबिम्ब है, तथा दर्शक के अर्न्तमन को भाव–विभोर कर देता है। अमृता शेरगिल ने पाश्चात्य रूपांकन एवं भारतीय जीवन दृष्टि को अपनी तूलिका का आधार बनाया। उनकी कला में भारत और हंगरी का समन्वय ठीक उसी प्रकार बन पड़ा है, जैसा उनके व्यक्तित्व में है। उनके चित्रों में रूप रेखा, सुनिर्मित, वर्ण, योजनापरक और आधुनिक है। चित्रों में विषय की नवीनता, रंगों और रेखाओं का संतुलित प्रयोग बहुत ही प्रभावोत्पादक रूप में हुआ है। उनके प्रयत्नों का प्रतिफल यह हुआ कि भारतीय चित्रशैली का एक स्वतन्त्र रूप उभरकर सामने आया और भारतीय नवजागरण की अभिव्यक्ति उनके चित्रों के माध्यम से हुई।

मुख्य बिन्दु

विषयों की नवीनता, रंगों और रेखाओं का संतुलित प्रयोग, आकृतियों में अव्यक्त रहस्यमयी एकाकी भावना, पूर्व और पश्चिम का मिश्रित अलौकिक कला समन्वय।

प्रस्तावना

अमृता शेरगिल ने पेरिस में रहकर चित्रकला का परिमार्जित ज्ञान प्राप्त किया और शनेः शने पाश्चात्य पद्धति पर तैल रंगों में बड़े–बड़े कैनवासों पर चित्र बनाने की अभ्यस्त हो गयीं। भारत आने पर उन्होंने भारतीय चित्रकला का गहरा अध्ययन किया और उसकी विशेषताओं और बारीकियों को समझा।

एक और पेरिस का विलासमय वातावरण, दूसरी और भारत की दयनीय दशा, एक और वैभव की चमक, दूसरी और मूक वेदना का करूण चीत्कार। अमृता दुविधा में पड़ गयी और अन्त में उन्होंने अनुभव किया कि वे एक ऐसी स्थिति में पहुँच गयी हैं, जहाँ वे स्वतन्त्र हैं उन्हें कोई बन्धन नहीं, वे अपनी इच्छानुसार अपनी कला का मुख मोड़ सकती हैं। उन्होंने आधुनिक भारतीय कला को विकसित और संवर्धित करने के लिए एक नया कदम उठाया। उन्होंने अन्य कलाकारों की भांति अजंता और राजपूत कला का अंधानुकरण न करके अपनी कला में पाश्चात्य और पूर्वीय कला के आवश्यक तत्वों को लेकर उनका सफल समन्वय किया। अमृता शेरगिल ने कला क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की और दो सर्वथा स्वतन्त्र एवं भिन्न देशों के प्रमुख कला तत्वों को लेकर एक मौलिक रूप प्रदान किया और सर्वथा नवीन शैली का प्रवर्तन किया।

शोध पत्र का उद्देश्य एवं प्रक्रिया

1934 में अमृता शेरगिल भारत आयीं, यहाँ उनको चित्रों के विषय भी मिल गये, भारत के गरीब दीन–हीन लोग। अपने चित्रों में उन्होंने ग्रामीण भारतीय जन जीवन को दर्शाया। पेरिस में वह अपने कला अध्ययन के दौरान लूब्र और दूसरे कला संग्रहालयों के भारतीय कक्षों में जाकर भारत की महान कला संस्कृति को हृदयंगम करने के प्रयास करती रहीं। उन्होंने नारी मन की विषमताओं को जिस शक्ति और दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया है उसका विषेश महत्व है। उन्होंने जीवन के विभिन्न पक्षों व भिन्न स्थितियों का व्यापक स्तर पर काफी समीप से देखने परखने का प्रयत्न किया है। ये जीवन स्थितियाँ व जीवन अनुभव उन्हें चाहे हंगरी में मिले हो अथवा भारत के विभिन्न प्रदेशों में सही रूप से ही उनके कला–पादप की मजबूत जड़े हैं।

अमृता शेरगिल का जीवन परिचय

अमृता शेरगिल का जन्म बुडापेस्ट (हंगरी) में 30 जनवरी 1913 को हुआ था। उनके पिता उमराव सिंह शेरगिल व माता का नाम मेरी अन्तवानेत था। अमृता का शुरूआती बचपन बुडापेस्ट में बीता। 1921 में हंगरी में आर्थिक समस्याएँ होने के कारण अमृता अपने माता–पिता के साथ भारत आ गयीं। यहीं अमृता की आरम्भिक शिक्षा संगीत और कला के साथ हुई। 1923 में अमृता की माता एक इटैलियन मूर्तिकार के सम्पर्क में आयीं और 1924 में मेरी अन्तवानेत अमृता को लेकर इटली आ गयीं और अमृता का दाखिला फ्लोरेंस के एक आर्ट स्कूल में करा दिया गया यद्यपि अमृता यहाँ कुछ माह ही टिक सकी और उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। कारण था एक नग्न स्त्री का चित्रांकन। जून 1924 में अमृता पुनः भारत लौट आयी। 1924 से 1929 तक का समय अमृता ने शिमला के समरहिल या गोरखपुर के छोटे से गाँव सरैया में गुजारा। इन्ही दिनों में उन्होनें शिमला और सरैया में क्रमशः पहाडी, दीन दुःखी स्त्री पुरूष और सादगी तथा सरलता से भरे ग्रामीण लोगो को नजदीक से देखा, जिसका प्रभाव उनके मन और मस्तिष्क पर अन्तिम काल तक रहा। 16 वर्ष की आयु में पेरिस आकर अमृता ने कला की शिक्षा ली। इसी अध्ययन काल में अमृता ने फ्रांस की राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी ग्राण्ड सैलून में 'यंग गर्ल्स' कनवरसेशन शीर्षक नामक चित्र भेजा, जिसे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ चित्र घोषित किया गया और इसी आधार पर अमृता को ग्राण्ड सैलून की फैलोशिप प्रदान की गयी। इस समय अमृता केवल 19 वर्ष की थी जो इतनी कम उम्र की दृष्टि से अपने आप में एक कीर्तिमान था। 1934 में अमृता अपने सपनों के भारत

लौट आयीं। अमृता के सन् 1933–34 के यूरोप में निर्मित अधिकांश चित्रों की विषयवस्तु केवल व्यवसायिक मॉडलों के नग्न चित्र हैं। भावुक अमृता ने भारत आने पर अपने परिवार और मित्रों के छवि चित्र अंकित किए, जिनमें पेरिस की स्कूली शिक्षा का प्रभाव झलकता है। अमृता ने 'प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय', मुंबई में उपलब्ध लघु चित्रों का अध्ययन किया। राजपूत और बसौली शैली के लघु चित्रों का सार उन्होंने ग्रहण किया और अपने भ्रमण के पश्चात निर्मित चित्रों में प्रयोग किया।

अमृता ने अजंता, एलोरा का भ्रमण किया और इन गुफाओं में आश्चर्यजनक रूप से शान्ति का अनुभव किया। अजन्ता उनके लिए शुद्ध पेटिंग का महान और सनातन उदाहरण था। 1938 में अमृता शेरगिल अपने मौसेरे भाई डा0 विक्टर एगन से विवाह के पश्चात् बुडापेस्ट के दो कमरों वाले फ्लैट में रहने लगी। अमृता इस विवाह से बेहद खुश थी, वह चार वर्ष बाद हंगरी आयी थी, अतः वहाँ रहने का अधिकाधिक सुख भोगना चाहती थी। गाँवों से अधिक लगाव होने के कारण अमृता ने अधिक समय हंगरी के गाँवों में व्यतीत किया। हंगरी में अस्थिर राजनैतिक वातावरण होने के कारण अमृता और विक्टर जून 1939 में भारत आकर सराया स्थित अपने पैतृक स्थान पर आ गयीं। जुलाई 1939 से सितम्बर 1941 के मध्य का सरैया प्रवास अमृता के जीवन का सर्वाधिक उपलब्धि दायक काल माना जा सकता है। इस समय में उन्होंने अपने चित्रों में मुगल और राजस्थानी शैली के चित्रों की प्राकृतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित अनेकों उत्कृष्ट चित्र रचे। जिनमें भारतीय नारी का अत्यन्त मार्मिक चित्रण हुआ है, किन्तु सरैया में रहकर अमृता के चित्रों की बिक्री की समस्या थी, प्रायः उनके चित्र बिकते नहीं थे, अतः 1941 में अमृता और विक्टर लाहौर चले गये, जो उस समय एक बड़ा सांस्कृतिक और कला केन्द्र था। वहाँ अमृता की पहली बड़ी एकल प्रदर्शनी होनी थी, किन्तु एकाएक वह गम्भीर रूप से बीमार हो गई और मात्र 28 वर्ष की आयु में शून्य में विलीन हो गई।

अमृता शेरगिल की कला का स्वरूप

अमृता शेरगिल ने भारत आकर अपने कलात्मक लक्ष्य की पूर्ति के लिये बंगाल स्कूल की पुनरुत्थानवादी कला शैली और बम्बई स्कूल की अकादमिक यथार्थवादी शैली से हटकर अपनी स्वयं की शैली को विकसित करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने भारत आते ही भारतीय जीवन का जो, मुख्यता श्रमजीवी ग्रामीण जीवन था, का निकट से आत्मीयतापूर्ण अध्ययन किया। भारतीय साधारण जनजीवन के चित्रों में, 'पहाड़ी स्त्रियाँ' 'भारत माता' बहुत ही भावपूर्ण व प्रसिद्ध हैं। दक्षिण भारत की यात्रा करके अमृता ने वहाँ साधारण लोगों के जीवन को चित्रित किया। इस समय के उनके चित्र 'ब्रह्मचारी', 'वधु का श्रंगार,' 'फल विक्रेता', आदि महत्वपूर्ण है। अमृता ने भारतीय ग्रामीण जीवन के लोगों की उदासी, दुःखों और उनके अभावों को अपने चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया और इसमें वह पूर्णरूपेण सफल भी हुई हैं। भारत लौटने पर उन्होंने शिमला के समीप ही समरहिल पर अपना छोटा सा स्टूडियो बना लिया था। वहाँ के चेहरों, रंगों व वातावरण को देखकर उन्हें लगा कि वे उन सभी को चित्रित करने की प्रतीक्षा में थी। जब उन्होंने भारत के गाँव और ग्रामीणों को देखा और उनसे बातचीत की तो उन्होंने महसूस किया कि उनके चित्रण के लिए उपयुक्त स्थान भारत ही है, यूरोप नहीं।

अमृता की प्रेरणा का स्रोत पीत धूसर धरती वाला वह भारत था, जिसमें श्यामवर्ण विषादयुक्त चेहरे वाले चलते–फिरते नर–नारी निवास करते हैं। और आज भी भारतीय गाँवों में वही निराशा, दुःख तथा अभाव दिखाई देता है। अमृता शेरगिल ने अपने चित्रों के माध्यम से भारत की आत्मा की पहचान शुरू की थी। उन्होंने अपना जीवन भारत के दरिद्र, दीन–हीन, दुःखी, उदास, जनजीवन को चित्रित करने में समर्पित कर दिया। अमृता ने भारत की जर्जर ग्रामीण दुःखी जनता को अंकित किया और अपने मौलिक तत्व को खोजा अमृता शेरगिल ने अपने बारे में कहा– ''मेरा काम परम्परावादी अर्थों में भले ही भारतीय न माना जाए लेकिन सिद्धान्त रूप में अपनी आत्मा में वह निश्चय ही भारतीय है।''[1]

अमृता शेरगिल की कला का वर्णन

अमृता शेरगिल के कार्य में पश्चिम की बहुत ही परिपक्व तकनीकी विषेशताएँ और परम्परागत भारतीय चित्रकला के मूल तत्व एक साथ मिल जाते हैं। उनकी कृतियों में सत्य के दर्शन होते हैं। उन्होनें नारी वर्ग की विषमताओं को जिस शक्ति और दृढ़ता से प्रस्तुत किया है उसका एक विशेष महत्व है। उनकी कला कृतियाँ सामाजिक दर्शन प्रकट करती हैं। अमृता ने अपनी शुरुआत उत्तर प्रभाववादी कला से की थी। यहाँ तक कि उनके भारत वापस आने का निर्णय भी गौगां के ताहिती जाने के निर्णय से प्रेरित था। भारत आने के बाद उन्होनें अपना दृष्टिकोण बिल्कुल बदल दिया। उन्होनें लिखा भी है कि यह उस भारत से बिल्कुल भिन्न था, जिसे वे आकर्षक यात्रा पोस्टरों में देखने की आदी हो चुकी थी। यह एक तरीके का ऐसा आकस्मिक आघात था, जिसने उन्हें समझा दिया था कि उनकी समस्याएँ उत्तर प्रभाववादी कलाकारों से बिल्कुल भिन्न तरह की होंगी, और इसके कारण ही वे अपनी 'ब्रह्मचारी' और 'दुल्हन का श्रृंगार' जैसी श्रेष्ठ कृतियाँ भारतीय कला को दे सकी। 1939 के बाद अमृता ने जो चित्र बनाये वे उनके बहुत ही गम्भीर कला कर्म का उदाहरण माने जाते हैं। रामकिंकर बैज ने एक बार कहा था कि ''शेरगिल ने अपनी मानवाकृतियों को मानवों की तरह नहीं, वस्तुओं की तरह इस्तेमाल किया है। आकृतियों का यह इस तरह एकांन्तिक सम्पुजंन और एक दूसरे के प्रति सम्प्रेषण का सर्वथा अभाव आज एक ही जगह उपस्थित होते हुए किसी एक घटना या कथा का अंग नहीं बनते। अमृता के चित्रों की हर आकृति अपनी एक अलग दुनिया में बंद है जो दर्शक को एक अवसादपूर्ण दृष्टि से देखते हुए भी कहीं और देखती रहती है। यह कुछ–कुछ शेरगिल की मानसिक स्थिति का बिम्ब है।''[2] अमृता ने कहा था– ''मुझे ऐसा लगता है मानो मैंने किसी एक घड़ी में चित्रांकन का श्रीगणेश न किया हो, बल्कि मैं सदा से ही चित्र आंकती रही हूँ, और यह विचित्र विश्वास भी मेरे हृदय में बध्दमूल रहा है कि मेरे जीवन का ध्येय केवल चित्रकार बनना ही था, और कुछ नहीं। मैंने सदैव सभी बातों में अपना मार्ग स्वयं खोजा है।[3]

अमृता शेरगिल के चित्रों के पात्र वैसे नहीं हैं जैसे वे साधारण मनुष्य को दिखाई देते हैं अपितु अमृता ने उन्हें अपनी संवेदनीय दृष्टि से देखकर मौलिक रूप प्रदान किया। अमृता के द्वारा चित्रित दीन–हीन दुखी, दुर्बल पात्रों को देखकर दर्शक के हृदय में करूणा बह निकलती है। अमृता की सबसे बड़ी विशेषता रंगों के एहसास की थी। उनके चित्रों में अजंता का रंग विधान, भारतीय लघु चित्रों का रंग विधान तथा उत्तर प्रभाववादी रंगविधान सब मिलकर एक नयी रंग योजना प्रस्तुत करते हैं। अमृता ने अपने चित्रों में लाल रंग को प्रमुख स्थान दिया हैं जिसमें 'झूला' (चित्र संख्या–1) 'दुल्हन'

(चित्र संख्या–2) तथा 'लाल बरामदा' (चित्र संख्या–3) आदि प्रमुख हैं। उन्होंने लाल रंग को अनेक तानों में हल्का, मध्यम और गहरा करके बड़ी सुंदरता के साथ प्रयुक्त किया है। ये रंग जीवन की नारी सुलभ कोमलता और जीवन के विभिन्न आयामों की सुन्दर झांकी प्रस्तुत करते हैं। अमृता का कहना था– ''मैं रंगों के प्रति अपनी भूख को कभी नियंत्रित नहीं कर सकती और मैं आश्चर्य करती हूँ कि क्या मैं कभी ऐसा कर सकूंगी।[4]

अमृता के शुरू के चित्रों में कैनवस पर बड़ी–बड़ी आकृतियाँ अंकित रहती थी किन्तु बाद में लघु चित्रों के चटख रंगों के आकर्षण ने अमृता के चित्रों में जगह पाने के लिए अन्तराल को विस्तृत कर दिया। अमृता शेरगिल ने भारतीय चित्रकला को पूर्वी और पश्चिमी चित्रांकन पद्धति का मिश्रित रूप प्रदान किया। पाश्चात्य पद्धति में कलाकार का सम्पर्क भौतिक जगत से अधिक रहता है और पूर्वी पद्धति में अर्न्तदृष्टि की संवेदनाओं को प्रमुखता प्रदान की जाती है। ए0 रामचन्द्रन ने अमृता के बारे में लिखा है–'अमृता शेरगिल की कलाकृतियों में अवसाद की एक झीनी सी चादर हर कहीं फैली हुई मालूम पड़ती है। असल में भारतीय मिनियेचर और शास्त्रीय संगीत दोनों की आत्मा में इस तरह अवसाद का एक तत्व पिरोया हुआ रहता है, जिसे शेरगिल ने अपनी कलाकृतियों में ढ़ाल दिया। इस रूप में देखें तो परवर्ती मिनियेचर कला का एक अटूट सिलसिला शेरगिल की कलाकृतियों में मिलता है। अवसाद का यही महत्वपूर्ण तत्व शेरगिल की कला की आत्मा को भारतीय बना देता है। शेरगिल के चित्र उनके व्यक्तित्व को एक चित्रकार के रूप में प्रतिष्ठित करने में एक नया आयाम देते हैं। ये चित्र एक भारतीय चित्रकार के ऐसे दस्तावेज हैं जो अपने काम के प्रति उत्कृष्ट रूप से ऐसे जुड़ा हो जैसे आदमी धर्म से जुड़ा होता है। उनकी कलाकृतियाँ देखकर ऐसा लगता है जैसे शेरगिल भूखे प्यासे लोगों के बीच में सचमुच रहती हैं। उनकी कृतियों में उनके रंगों में जीवन की धड़कन उनके रूप आकारों और व्यक्तित्व की तटस्थता उनकी कृतियों की उदासी में घुलकर भारतीय कला को एक जैसे नए मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती हैं, जिसे अनदेखा कर सकना नामुमकिन हो गया है। अमृता ने भारतीय ग्राम्य जीवन की आत्मा के बुनियादी तत्व को उदासी, हताशा और अभावों के माध्यम से चित्रित करने की कोशिश की। अभिशप्त जीवन को सहने वाले व्यक्तियों को अपने सम्मुख देखकर और ऐसी हर सूरत पर विचारमग्न अमृता दुःख दर्द के इसी माहौल में रहकर अपनी ही खोज के कार्य में जुट गयी। नियति द्वारा निर्मित दुर्भाग्य में गीत की यह भावना उनके शिमला प्रवास के अन्तिम दिनों तक उनकी शाश्वत मनः स्थिति बनकर रह गयी थी। 1934 से 1938 में बने उनके चित्र 'तीन युवतियाँ (चित्र सं0–4) 'भारत माता' (चित्र सं0–5) 'दो स्त्रियाँ' (चित्र सं0–6) 'पर्वतीय महिलाएं (चित्र सं0–7) 'फल विक्रेता' (चित्र सं0–8) 'ब्रहमचारी' (चित्र सं0–9) 'दुल्हन का श्रंगार' (चित्र सं0–10) 'दक्षिण ग्रामीण भारतीय बाजार जाते हुए' (चित्र सं0–11) इत्यादि मानवीय व्यथा पर उनकी चिन्ता के परिचायक हैं। इन चित्रों में ऐसे पुरूष और ऐसी नारियां समायी हुई थी जो दुख दर्द से आंकलात हो और जिनका अवसाद उनकी दशा में मर्मस्पर्शी बनकर झलकता हो। ठहरी हुई सी दिखायी देने वाली ये आकृतियाँ दरअसल जीवन के इस दुःखांत नाटक की प्रतिनायिकाएँ है जिनमे ये घुल कर मात्र हड्डियों का ढ़ाचा रह गयी हैं। उनकी छाया पराधीनता की सूचना दे रही हैं। चिन्ता भरी आँखें बता रही हैं कि उन्होनें अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया है।

अमृता शेरगिल की उपलब्धियाँ

अमृता शेरगिल पेरिस में ग्रेंड सैलून की एसोसिएट के रूप में चुनी जाने वाली सबसे कम उम्र की, और एकमात्र, एशियाई कलाकार थी। उनको चित्र 'यंग गर्ल्स' के लिए स्वर्ण पदक मिला था। अमृता को भारतीय सर्वे के दौरान 1976 और 1979 में देश के नौ सर्वश्रेष्ठ चित्रकारों में शामिल किया गया था। 2006 में उनकी पेटिंग 'विलेज सीन' (चित्र सं0–12) नई दिल्ली में नीलामी में 6.9 करोड में बिकी। यह उस समय भारत में सबसे महंगी पेटिंग के रूप में जानी जाती है। इसके बाद 2018 में मुम्बई में एक प्रदर्शनी में अमृता की पेटिंग 'द लिटिल गर्ल इन ब्लू' (चित्र सं0–13) को 18. 69 करोड़ रूपये में नीलाम किया गया। 2021 में अमृता की पेटिंग 'इन द लेडीज एनक्लोजर' (चित्र सं0–14) को देश की दूसरी सबसे मंहगी कलाकृति माना गया। मुंबई में सैफरन आर्ट की ओर से आयोजित नीलामी में इसे 37.8 करोड़ रूपये में बेचा गया। भारत सरकार की तरफ से अमृता की पेटिंग्स को राष्ट्रीय सम्पत्ति का दर्जा दिया गया है। इस सम्मान की वजह से उनकी पेटिंग्स को देश के बाहर ले जाना गैर कानूनी है। इंडिया पोस्ट ने साल 1978 में उनकी पेटिंग 'हिल वीमेन' पर डाक टिकट जारी किया था और लुटियंस दिल्ली में उनके नाम पर अमृता शेरगिल मार्ग है। बुडापेस्ट में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र का नाम अमृता शेरगिल सांस्कृतिक केन्द्र है। भारत सरकार ने उनके कार्यों (पेंटिंग्स) को राष्ट्रीय कला निधि घोषित किया है और उनमें से अधिकांश चित्र नई दिल्ली 'मार्डन आर्ट गैलरी' में सुरक्षित हैं।

क्लासिकल इंडियन आर्ट को मार्डन इंडियन आर्ट की दिशा देने का श्रेय अमृता शेरगिल को ही जाता है, कला क्षेत्र में नारियों का सदैव अभाव रहा है, किन्तु अमृता ने अल्पकाल में ही आधुनिक कलाकारों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। उनकी कला ने सैयद हैदर रजा से लेकर अर्पिता सिंह तक भारतीय कलाकारों की पीढ़ियों को प्रभावित किया और महिलाओं की दुर्दशा के उनके चित्रण ने उनकी कला को भारत और विदेशों दोनों में बड़े स्तर पर महिलाओं के लिये एक प्रकाश स्तम्भ बना दिया है। उन्होंने कला में पैठकर जीवन के निगूढ़ सत्य के सम्मिश्रण का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप प्रस्तुत किया और इस प्रकार उनके चित्रों में अर्न्तमन का चिंतन साकार हो उठा।

निष्कर्ष

अमृता शेरगिल ने पाश्चात्य अंकन पद्धति तथा भारतीय जीवन दृष्टि को अपनी कला का आधार बनाया। अमृता पहली बार आम भारतीय महिलाओं को कैनवास पर लेकर आयी। अमृता ने रंगों से भरे अपने छोटे से जीवन में कला जगत को वह सब दे दिया जिसके आधार पर पूर्व और पश्चिम की कला सालो साल परखी जा सकती है। अमृता की 100 वीं जयंती पर यूनेस्को ने उनके सम्मान में 2013 को अंतराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया। उनका वर्ण विन्यास जिस सूक्ष्म वर्ण चेतना से युक्त मिलता है उसके आधार पर यदि उन्हें 'कलरिस्ट' कहा जाये तो उपयुक्त होगा। निःसन्देह यदि वह कुछ और वर्ष जीवित रहतीं तो कला क्षेत्र में असाधारण क्रान्ति मचा देती और भारतीय कलाकारों के लिये नई कला साधना का मार्ग प्रशस्त कर जातीं। छोटी सी जिन्दगी में अमृता ने इतिहास को उन गहरे रंगो से भर दिया जिनकी छाप आज भी फीकी नहीं पड़ी है।

सन्दर्भ

1. नन्दन, कन्हैया लाल. (1987). 'अमृता शेरगिल'. पराग प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **117.**
2. वही. पृष्ठ **119–120.**
3. गुर्टू, शचि रानी. (1969). कला के प्रणेता. प्रकाशन इण्डिया पब्लिशिंग हाउसः पृष्ठ **133.**
4. Karl, Khandalwala. (1944). Amrita Shergil. Published by P. Dinswah for. New book C. Ltd: Honby Read Bombay. Pg. **42.**

चित्र सूची

(चित्र सं0–1)
झूला

(चित्र सं0–2)
दुल्हन

(चित्र सं0–3)
लाल बरामदा

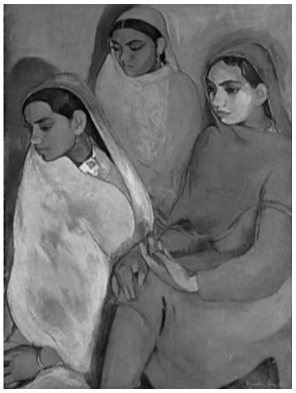

(चित्र सं0–4)
तीन युवतियाँ

(चित्र सं0–5)
भारतमाता

(चित्र सं0–6)
दो स्त्रियाँ

(चित्र सं0–7)
पर्वतीय महिलाएँ

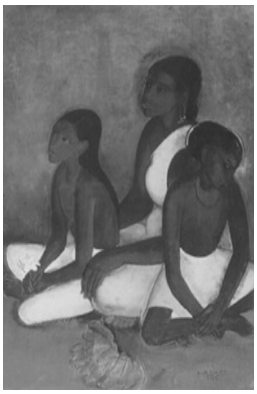

(चित्र सं0–8)
फल विक्रेता

(चित्र सं0–9)
ब्रहमचारी

(चित्र सं0–10)
दुल्हन का श्रृंगार

(चित्र सं0–11)
दक्षिण ग्रामीण भारतीय बाजार जाते हुए

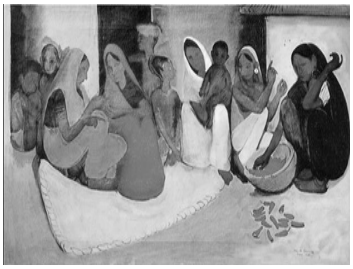

(चित्र सं0–12)
विलेज सीन

(चित्र सं0–13)
द लिटिल गर्ल इन ब्लू

(चित्र सं0–14)
इन द लेडीज एनक्लोजर